The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 11 | November 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विवाहित–अविवाहित छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० शाहीन खान
असिस्टेंट प्रोफेसर शिक्षाशास्त्र, एन०ए०के०पी० पीजी कॉलेज फर्रुखाबाद, उ०प्र०
Email: Khanreena0808@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17922460

ARTICLE DETAILS

Research Paper
Accepted: 22-11-2025
Published: 10-12-2025

Keywords:
परा–स्नातक, विवाहित छात्राएं, अविवाहित छात्राएं, समायोजन व्यवहार

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विवाहित–अविवाहित छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना हैं। आधुनिक समय में शिक्षा प्रणाली में महिला शिक्षा के प्रचार तथा प्रसार के साथ ही साथ उनके वैवाहिक जीवन पर प्रभाव भी महत्वपूर्ण बन गया है।अध्ययन में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिला के पर–स्नातक स्तर की छात्राओं का चुनाव यादृच्छिक विधि से किया गया है। इसमें 50 विवाहित छात्राएं तथा 50 अविवाहित छात्राओं को प्रतिदर्श के रूप में शामिल किया गया है। शोध अध्ययन में विवाहित–अविवाहित छात्राओं के समायोजन से संबंधित पांच क्षेत्र पारिवारिक, शैक्षिक, सामाजिक, स्वास्थ्य तथा भावनात्मक समायोजन का तुलनात्मक अंतर का विश्लेषण किया गया। शोधकत्री ने आंकड़ों की सांख्यिकी विश्लेषण के लिए माध्य, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया है। शोध कार्य के निष्कर्ष में पाया गया कि विवाहित छात्राओं का पारिवारिक समायोजन अविवाहित छात्राओं की तुलना में अधिक है। इसके अतिरिक्त शैक्षिक, सामाजिक, स्वास्थ्य तथा भावनात्मक समायोजन अविवाहित छात्राओं का विवाहित छात्राओं की तुलना में उत्तम है। इस प्रकार से विवाहित–अविवाहित छात्राओं के समायोजन में महत्वपूर्ण एवं सार्थक अंतर प्राप्त हुआ।

प्रस्तावना :

समायोजन मनुष्य के जीवन का एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण व अनिवार्य घटक है जो कि उसको स्वयं के परिवेश के साथ संतुलन व सामंजस्य स्थापित करने में सहयोग करता है। परा–स्नातक स्तर में अध्ययनरत छात्राएं जीवन के संक्रमण काल से गुजर रही होतीं है जहां पर वह उच्च शिक्षा, करियर तथा साथ ही साथ अपने व्यक्तिगत जीवन के मध्य संतुलन स्थापित करने में प्रयासरत रहतीं है। विवाहित छात्राओं को पारिवारिक दायित्वों के साथ शिक्षा को जारी रखने में भी अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।वहीं दूसरी ओर अविवाहित छात्राएं अधिक स्वतंत्रत तथा समय का भली–भांति सदुपयोग कर सकती हैं। अतः यह अध्ययन इन दोनों ही समूह के समायोजन के विभिन्न क्षेत्रों की स्थिति का तुलनात्मक मूल्यांकन को प्रस्तुत करता है।

✦ **अध्ययन की आवश्यकता** : वर्तमान युग में परा–स्नातक कक्षा में अध्ययनरत छात्राओं के जीवन का एक अहम मकसद उनको लोकतांत्रिक बनाना है। साथ ही साथ वर्तमान में छात्राओं के लिए इस व्यस्त तथा दुरूह जीवन में सामंजस्य को को स्थापित करना एक विराट समस्या का विषय है। इसके अतिरिक्त महिलाओं की शिक्षा के बढ़ते स्तर के साथ ही साथ विवाह के पश्चात शिक्षा को जारी रखने की प्रवृत्ति भी बढ़ती जा रही है। विवाहित व अविवाहित छात्राओं का शैक्षिक, सामाजिक व संवेगात्मक समायोजन की स्थिति की जानकारी शिक्षण संस्थानों में निर्देशन व परामर्श सेवाओं के विकास हेतु अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हो सकती है।इन्हीं सभी तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए शोधकत्री ने परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विवाहित–अविवाहित छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन नामक शोध समस्या पर प्रस्तुत शोधकार्य को चयनित किया है।

✦ **समस्या कथनः**

''परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विवाहित–अविवाहित छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।''

✦ **शोध अध्ययन के उद्देश्य :**

1. परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विवाहित–अविवाहित छात्राओं के पारिवारिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विवाहित–अविवाहित छात्राओं के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विवाहित–अविवाहित छात्राओं के सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विवाहित–अविवाहित छात्राओं के स्वास्थ्य समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5. परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विवाहित–अविवाहित छात्राओं के भावनात्मक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

✦ परिकल्पनाएँ :

1. परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विवाहित–अविवाहित छात्राओं के पारिवारिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नही है।
2. परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विवाहित–अविवाहित छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नही है।
3. परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विवाहित–अविवाहित छात्राओं के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नही है।
4. परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विवाहित–अविवाहित छात्राओं के स्वास्थ्य समायोजन में कोई सार्थक अंतर नही है।
5. परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विवाहित–अविवाहित छात्राओं के भावनात्मक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नही है।

✦ शोध समस्या का परिसीमांकन :

1. प्रस्तुत शोध कार्य जनपद फर्रुखवाद के परा–स्नातक महाविद्यालयों तक ही सीमित है।
2. शोध में केवल परा–स्नातक स्तर के कला संकाय की विवाहिता–अविवाहित छात्राओं को ही सम्मिलित किया गया है।
3. शोध में केवल समायोजन से सम्बंधित पाँच क्षेत्रों पारिवारिक, शैक्षिक, सामाजिक, स्वास्थ्य तथा भावनात्मक समायोजन का ही अध्ययन किया गया है।

✦ सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण :

✶ Bhattia (2012) के अनुसार, विवाहित छात्राओं में तनाव और समायोजन के बीच नकारात्मक संबंध पाया गया।

✶ Sharma & Gupta (2019) के अनुसार, अविवाहित छात्राओं में शैक्षिक समायोजन बेहतर होता है क्योंकि उनकी जिम्मेदारी कम होती है।

✶ अरोड़ा (2018) ने अपने अध्ययन में पाया कि अविवाहित छात्राओं का शैक्षणिक प्रदर्शन विवाहित

छात्राओं से बेहतर है।

✶ गुप्ता एवं शर्मा (2020) ने बताया कि विवाहित छात्राओं में भावनात्मक परिपक्वता अधिक होती है, जिससे वे सामाजिक समायोजन में अपेक्षाकृत सफल रहती हैं।

✶ Singh & Kaur (2022) के अनुसार, वैवाहिक स्थिति व्यक्ति की मानसिक स्वास्थ्य स्थिति और समायोजन शैली पर प्रभाव डालती है।

✶ Verma (2023) के शोध के अनुसार, उच्च शिक्षा में विवाहित महिलाओं को समय प्रबंधन, पारिवारिक दबाव एवं सामाजिक अपेक्षाओं के कारण अतिरिक्त तनाव का सामना करना पड़ता है।

✦ शोध कार्य प्रणाली :

1. **शोध विधि** : प्रस्तुत शोध कार्य की प्रकृति तथा विषयवस्तु को दृष्टिगत रखते हुए शोधकत्री ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।
2. **जनसंख्या** : परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत सभी महिला छात्रायें (विवाहित–अविवाहित)
3. **नमूना** :प्रस्तुत शोध में नमूना हेतु उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जनपद के परा–स्नातक महाविद्यालयों की कुल 100 छात्राओं को चयनित किया गया है। जिसमें 50 संख्या विवाहित छात्राओं की एवं 50 संख्या अविवाहित छात्राओं की है। इसके अतिरिक्त नमूने का चयन असमानुपाती स्तरित यादृच्छिक पद्वति द्वारा किया गया है।

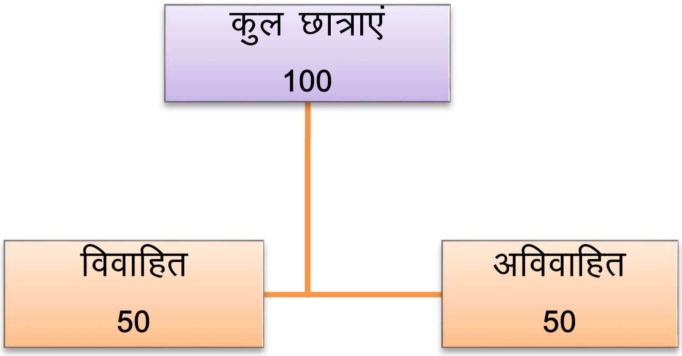

✦ शोध उपकरण :

प्रस्तुत अध्ययन में विवाहित–अविवाहित छात्राओं के समायोजन से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों के मापन हेतु डॉ० तारेश भाटिया द्वारा निर्मित तथा मानकीकृत व एन०पी०सी० आगरा द्वारा प्रकाशित की गयी एडजस्टमेंट इन्वेंटरी को प्रयोग में लाया गया है।

✦ सांख्यिकी विधि :

मानक विचलन (SD),माध्य (MEAN) एवं क्रांतिक अनुपात (CR) का उपयोग किया गया हैं।

✦ परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

उद्देश्य–1 परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विवाहित–अविवाहित छात्राओं के पारिवारिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

$\mathbf{H_{01}}$ परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विवाहित–अविवाहित छात्राओं के पारिवारिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नही है।

1. **पारिवारिक समायोजन**

समूह	SAMPLE SIZE	M	SD	CR	SignificanceLevel .05 SIG table v =1.98	df
विवाहित	50	18.5	1.8	5.88	सार्थक	98
अविवाहित	50	16.2	2.1			

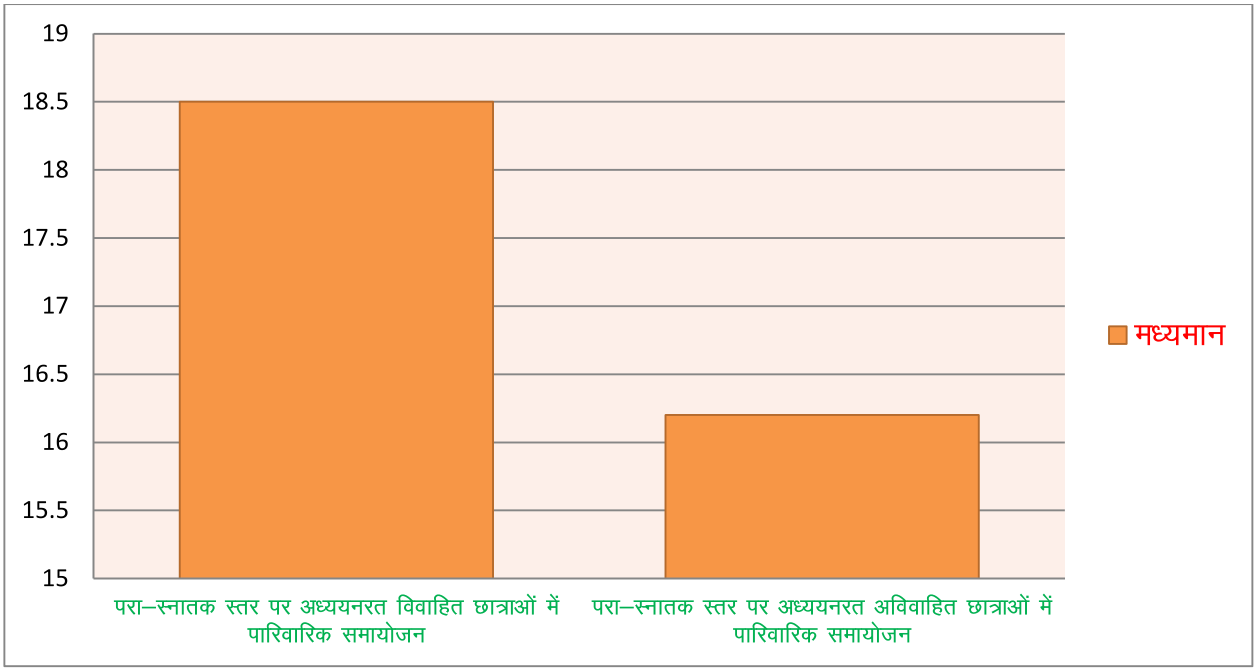

व्याख्याः

पारिवारिक समायोजन के क्षेत्र में विवाहित और अविवाहित छात्राओं के मध्यमान का मान क्रमशः 18.5 व 16.2 है तथा मानक विचलन क्रमशः 1.8 व 2.1 है। इसके साथ दोनों ही समूह के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता के लिये परिगणित क्रांतिक अनुपात का मान 5.88 है जो मुक्तांश 98 पर सार्थकता स्तर 0.05 के तालिका मान 1.98 से अधिक है इस प्रकार से स्पष्ट है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर H_0 अस्वीकृत होती है। अर्थात् दोनों समूहों के बीच पारिवारिक समायोजन में वास्तविक अन्तर है।

उद्देश्य – 2 परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विवाहित–अविवाहित छात्राओं के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

H_{02} परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विवाहित–अविवाहित छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नही है।

2. शैक्षिक समायोजन

समूह	SAMPLE SIZE	M	SD	CR	Significance Level .05 SIG table v =1.98	df
विवाहित	50	15.8	2.5	4.64	सार्थक	98

अविवाहित	50	17.9	2.0			

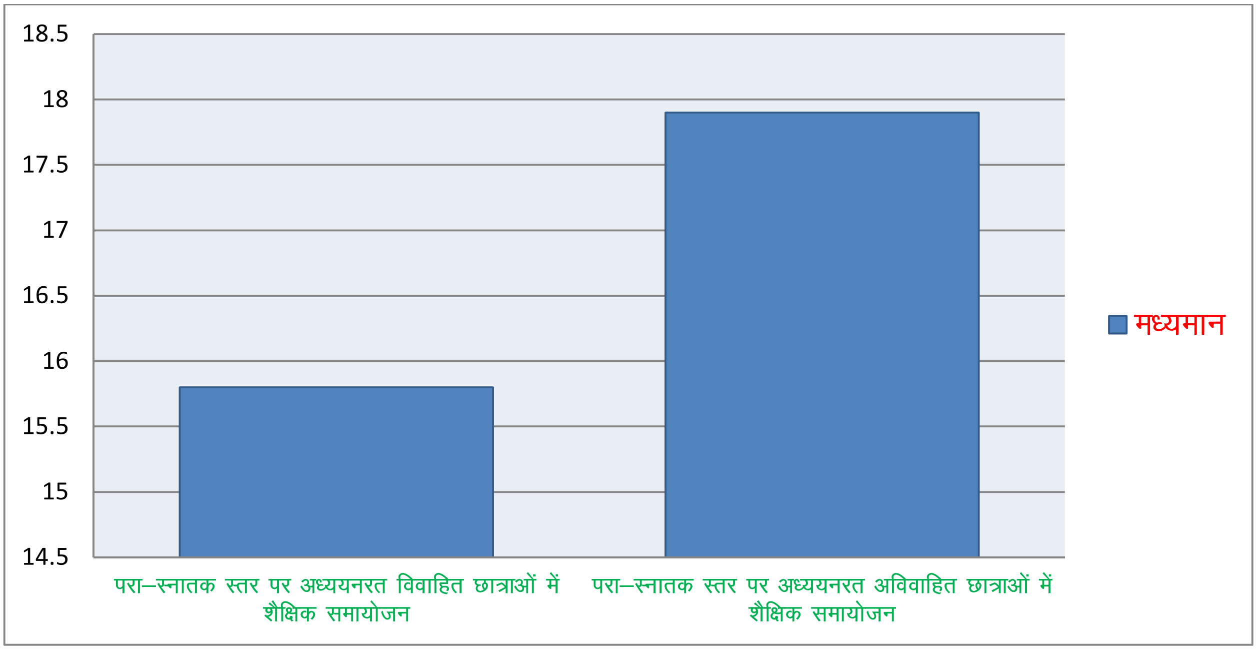

व्याख्याः

शैक्षिक समायोजन के क्षेत्र में विवाहित और अविवाहित छात्राओं के मध्यमान का मान क्रमशः 15.8 व 17.9 है तथा मानक विचलन क्रमशः 2.5 व 2.0 है। इसके साथ दोनों ही समूह के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता के लिये परिगणित क्रांतिक अनुपात का मान 4.64 है जो मुक्तांश 98 पर सार्थकता स्तर 0.05 के तालिका मान 1.98 से अधिक है इस प्रकार से स्पष्ट है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर H_0 अस्वीकृत होती है। अर्थात् दोनों समूहों के बीच शैक्षिक समायोजन में वास्तविक अन्तर है।

उद्देश्य – 3 परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विवाहित–अविवाहित छात्राओं के सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

H_{03} परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विवाहित–अविवाहित छात्राओं के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नही है।

3. सामाजिक समायोजन

स्मूह					Significan	

	SAMPLE SIZE	M	SD	CR	ce Level .05 SIG table v =1.98	Df
विवाहित	50	14.5	2.3	3.56	सार्थक	98
अविवाहित	50	16.0	1.9			

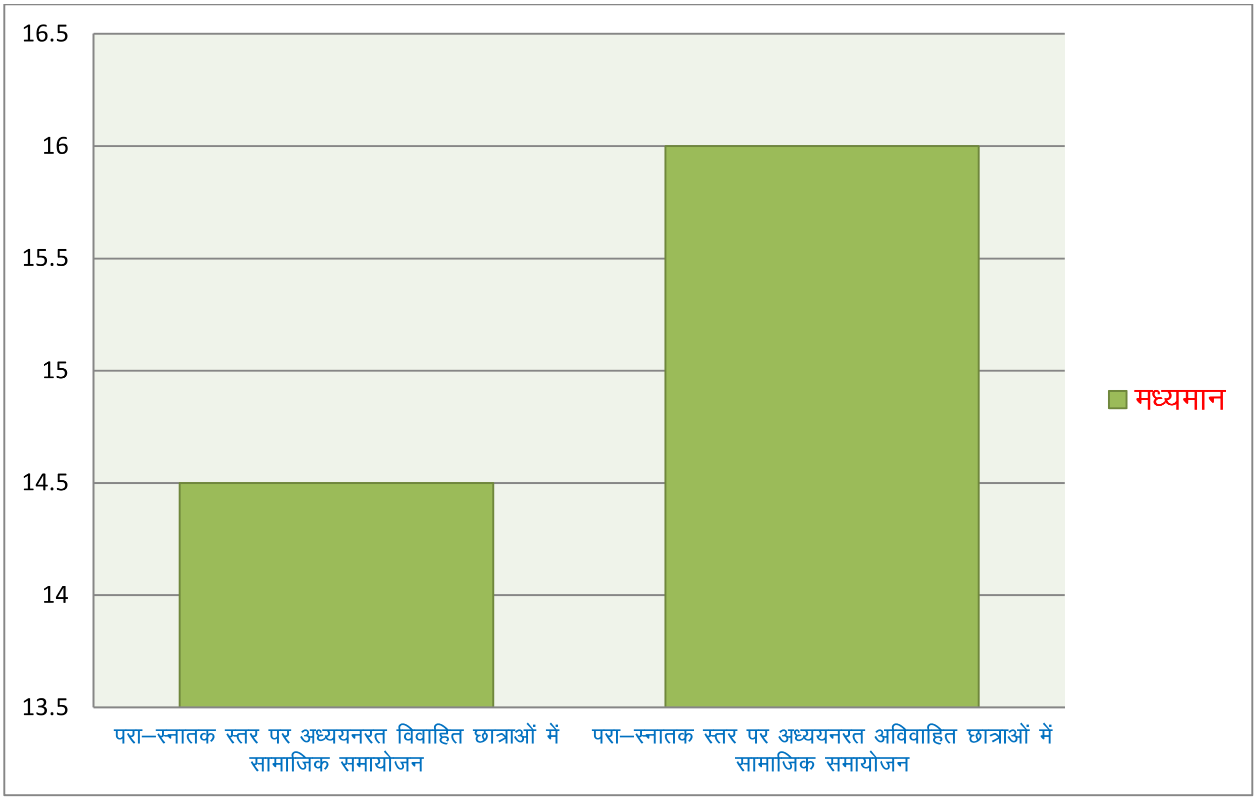

व्याख्याः

सामाजिक समायोजन के क्षेत्र में विवाहित और अविवाहित छात्राओं के मध्यमान का मान क्रमशः 14.5 व 16.0 है तथा मानक विचलन क्रमशः 2.3 व 1.9 है। इसके साथ दोनों ही समूह के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता के लिये परिगणित क्रांतिक अनुपात का मान 3.56 है जो मुक्तांश 98 पर सार्थकता स्तर 0.05 के तालिका मान 1.98 से अधिक

है इस प्रकार से स्पष्ट है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर H_0 अस्वीकृत होती है। अर्थात् दोनों समूहों के बीच सामाजिक समायोजन में वास्तविक अन्तर है।

उद्देश्य – 4 परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विवाहित–अविवाहित छात्राओं के स्वास्थ्य समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

H_{04} परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विवाहित–अविवाहित छात्राओं के स्वास्थ्य समायोजन में कोई सार्थक अंतर नही है।

4. स्वास्थ्य समायोजन

समूह	SAMPLE SIZE	M	SD	CR	Significance Level .05 SIG table v =1.98	**df**
विवाहित	50	13.9	2.0	3.50	सार्थक	98
अविवाहित	50	15.2	1.7			

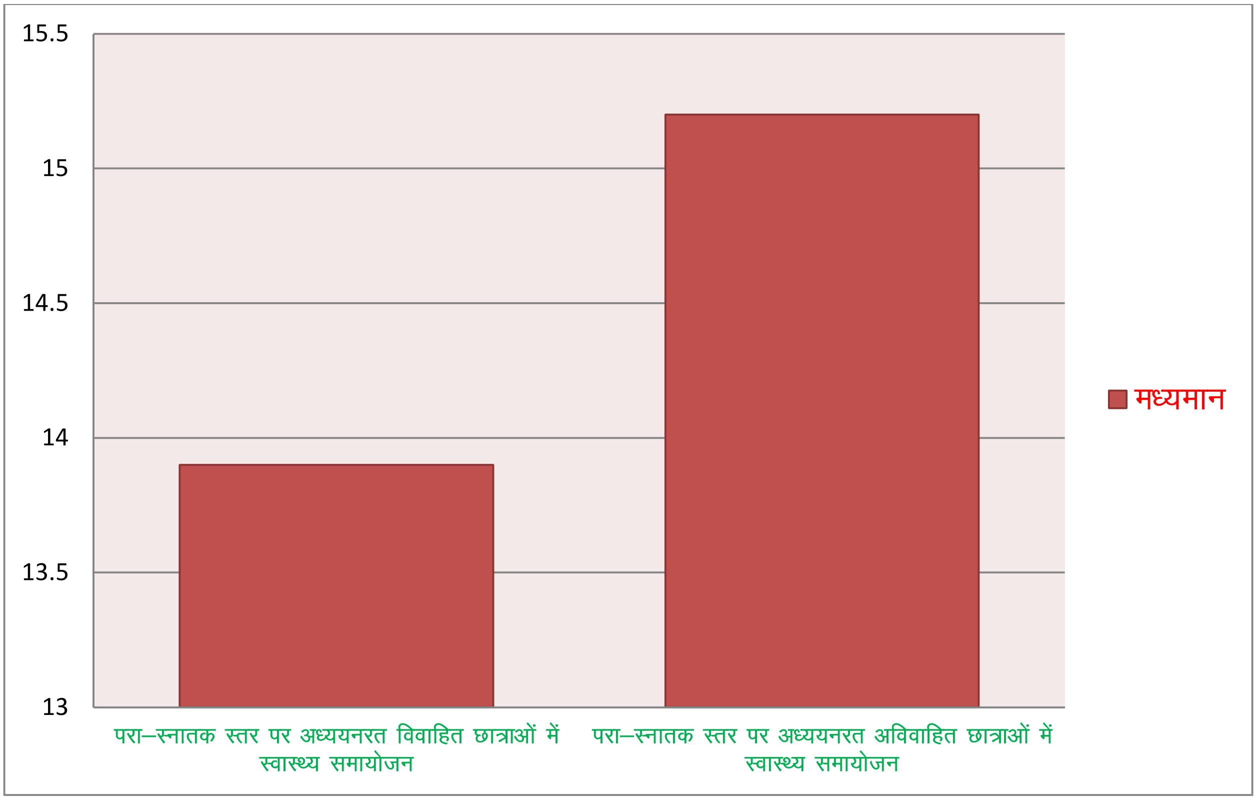

व्याख्याः

स्वास्थ्य समायोजन के क्षेत्र में विवाहित और अविवाहित छात्राओं के मध्यमान का मान क्रमशः 13.9 व 15.2 है तथा मानक विचलन क्रमशः 2.0 व 1.7 है। इसके साथ दोनों ही समूह के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता के लिये परिगणित क्रांतिक अनुपात का मान 3.50 है जो मुक्तांश 98 पर सार्थकता स्तर 0.05 के तालिका मान 1.98 से अधिक है इस प्रकार से स्पष्ट है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर H_0 अस्वीकृत होती है। अर्थात् दोनों समूहों के बीच स्वास्थ्य समायोजन में वास्तविक अन्तर है।

उद्देश्य – 5 परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विवाहित–अविवाहित छात्राओं के भावनात्मक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

H_{05} परा–स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विवाहित–अविवाहित छात्राओं के भावनात्मक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नही है।

5. भावनात्मक समायोजन

समूह	SAMPLE	M	SD	CR	Significance Level	**df**
					.05 SIG	

	SIZE				table v =1.98	
विवाहित	50	14.0	2.2	5.11	सार्थक	98
अविवाहित	50	16.1	1.9			

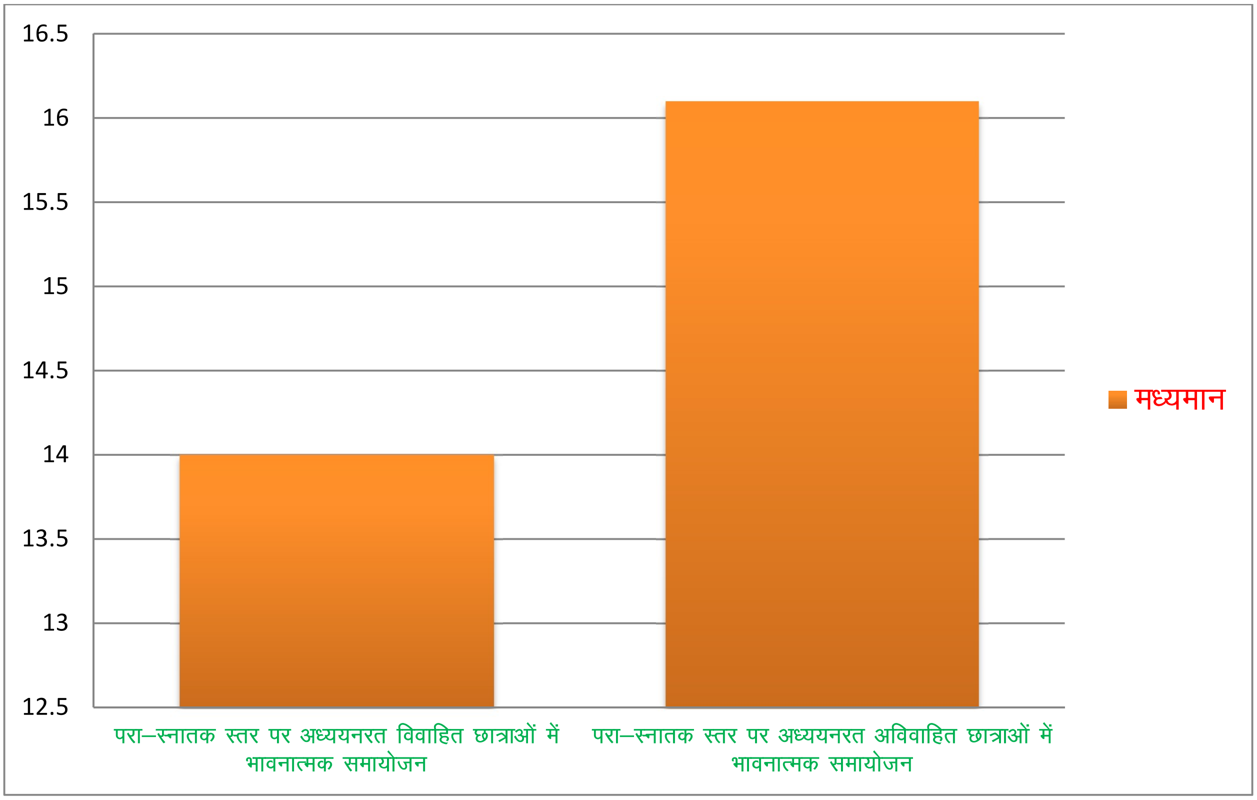

व्याख्याः

भावनात्मक समायोजन के क्षेत्र में विवाहित और अविवाहित छात्राओं के मध्यमान का मान क्रमशः 14.0 व 16.1 है तथा मानक विचलन क्रमशः 2.2 व 1.9 है। इसके साथ दोनों ही समूह के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता के लिये परिगणित क्रांतिक अनुपात का मान 5.11 है जो मुक्तांश 98 पर सार्थकता स्तर 0.05 के तालिका मान 1.98 से अधिक है इस प्रकार से स्पष्ट है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर H_0 अस्वीकृत होती है। अर्थात् दोनों समूहों के बीच भावनात्मक समायोजन में वास्तविक अन्तर है।

✦ शैक्षिक निहितार्थ :

उपरोक्त शोध अध्ययन से स्पष्ट है कि शिक्षा केवल ज्ञान प्रदान करने की प्रक्रिया ही नहीं है बल्कि समायोजन तथा मानसिक स्वास्थ्य के विकास की भी प्रक्रिया है । यदि उच्च शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता को संज्ञान में लेते हुए शिक्षण व्यवस्था को विकसित करें, तो यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा जीवन संतुष्टि दोनों में वृद्धि होगी। यह शोध अध्ययन इंगित करता है कि अविवाहित छात्राओं की अपेक्षा विवाहित छात्राओं को अपने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन करने में अनेक कठिनाइयां होती हैं। अतः महिला शिक्षा संबंधी नीतियों में विवाहित छात्रों को विशेष अवसर, सुविधा, छात्रवृत्ति तथा सहायता कार्यक्रम प्रदान कराए जाने चाहिए। यह कदम उनको उच्च शिक्षा में उनकी सहभागिता को और अधिक प्रोत्साहित करेगा। शोध अध्ययन के निष्कर्ष से यह भी ज्ञात हुआ है की भावनात्मक समायोजन में भी अविवाहित छात्राओं की तुलना में विवाह छात्राएं अधिक कमजोर हैं। अतः उच्च शिक्षण संस्थानों में भावनात्मक बुध्दिमता तथा साथ ही साथ मानसिक स्वास्थ्य को भी पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों के मध्य सकारात्मक सामाजिक संबंध स्थापित करने हेतु समूह परिचर्चा, सहयोगात्मक प्रोजेक्ट कार्य और सहपाठी समर्थन तंत्र को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए। जिससे सामाजिक समायोजन तथा उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। इसके साथ ही साथ विवाहित छात्राओं हेतु लचीली समय सारणी दत्त कार्य जमा करने की सुविधाजनक अवधि तथा हाइब्रिड शिक्षा प्रणाली भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकती है। ऐसा करने से विवाहित छात्राओं के समायोजन तथा प्रदर्शन दोनों में ही सुधार होगा। इस प्रकार से शोध अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट है कि विवाहित छात्राओं की अपेक्षा अविवाहित छात्राओं के समायोजन का स्तर निम्न है अतः यह परिणाम अध्यापक,शिक्षा प्रशासन, काउंसलर तथा नीति–निर्माता के लिए अनेक शैक्षिक संकेत प्रदान करता है।

✦ References:

- **गुप्ता, एस0पी0 (2015)**, अनुसंधान संदर्शिका, इलाहाबाद :शारदा पुस्तक भवन। पृष्ठ स० 88
- **गुप्ता, महावीर प्रसाद** एवं **ममता गुप्ता (2005)**, शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श, आगराः एच0पी0 भार्गव बुक हाउस। पृष्ठ स० 29
- **सुलेमान, मो0 (2006)**, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, पटना :जनरल बुक एजेन्सी। पृष्ठ स० 77
- **सिंह, अरूण कुमार (2009)**, शिक्षा मनोविज्ञान, पटना : भारतीय भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्री ब्यूटर्स। पृष्ठ स० 98
- **सारस्वत, मालती एवं मधुरिमा सिंह (2012)**, शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, लखनऊ : आलोक

प्रकाशन।

- **सिंह, अरूण कुमार (2013)**, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां, दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास। पृष्ठ स० 72
- **सिंह,तेजपाल (2010)**, जनपद हमीरपुर के बी०एड० में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सृजनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन लघु शोध प्रबंध बुंदेलखंड यूनिवर्सिटी, झाँसी, पृष्ठ स० 90
- **सिंह, सुनील कुमार (2012)**, उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सृजनात्मकता का प्रभाव लघु शोध प्रबंध लखनऊ यूनिवर्सिटी, लखनऊ पृष्ठ स० 78
- https://eric.ed.gov
- http://csjmu.refread.com
- http://shodhganga.inflibnet.ac.in
- https://shodhgangotri.inflibnet.ac.in
- www.wikipedia.com